नाम :- डॉ सुव्रता गुप्ता   वर्ग- स्नातक प्रथम वर्ष
विभाग - हिंदी   पत्र - I

PAGE NO.
DATE: [redacted]

* पाश्चात्य की एक जीवित जाति के संपर्क में आकर बद्ध-पतित देश के सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक और आर्थिक जीवन को जो झटका लगा, उससे वर्षों के अलसाए जीवन में नवस्फूर्ति और चेतना का संचार हुआ। जीवन के साथ घनिष्ठ संबंध होने के कारण साहित्य भी इन नवीन प्रभावों से अछूता न रह सका।

विषयों की अनेकरूपता
हिन्दी-गद्य-साहित्य की उन्नति
कविता भी नए-नए विषयों की ओर मुड़ी

* हिन्दी सा० के नवीन, विशद, पूर्ण और विविध विषय-संप० स्वरूप के निर्माण का श्रीगणेश १९वीं शता०

भारतेन्दु-युग में राष्ट्रीयता का एक विशेष रूप विकसित हुआ। नवोत्थान द्वारा पोषित नवीन विचारों की सृष्टि एवं साहित्य में नवोदित धार्मिक, सा०, राज० को आश्रय एवं प्राचीन वैभव (देश के) की ओर आकर्षण — ने इस राष्ट्रीयता की रूपरेखा तैयार की। इस युग के साहित्य का एक प्रमुख कार्य धार्मिक एवं सामाजिक कुरीतियों और कुप्रथाओं तथा अज्ञान और अविद्या के गर्त में डूबी हुई मूक एवं हीनता से ग्रसित जनता में ऊर्जा का संचार किया।

एक प्रकार की आकुलता थी, जो उन्हें निरंतर देने को विवश करती होगी। भारतेन्दु की विषय विविधता उन परिस्थितियों का साक्षात्कार था, जिन्हें उन्होंने जिया था

भारत चार वर्गों में बँटा था - राजा, जमींदार, व्यापारी, किसान / कारीगर

राजनीति, शिक्षा और नौकरियों तक साधारण मनुष्य की पहुँच नहीं थी। इसलिए ऐसे निराशा एवं अन्धकारपूर्ण वातावरण में लोग वर्ण-व्यवस्था, धर्म और सांप्रदायिक विषयों की ओर झुके। यह एकमात्र मानसिक संतुष्टि का साधन रह गया था।

— अंग्रेजी सरकार ने इन कुरीतियों एवं अन्धविश्वासों को मिटाने का कोई प्रयत्न नहीं किया। जनता में धार्मिक अन्धविश्वास और रूढ़िगत विचार को रहे — बाह्मण का 'अंधेर नगरी' में कहना - टके के वास्ते अपनी जात बदल दें - ऐसी ही परिस्थिति का परिचायक है।

भारतेन्दु काल में दो विचारधाराएँ प्रचलित :

(i) राष्ट्रीय
(ii) वर्ग, धर्म एवं सांप्रदायिक विषयों से संबंध रखनेवाली

— युग की सृष्टि और युग-द्रष्टा स्रष्टा भी थे।
— इतिहास की गति निर्धारित की।

अंधेर नगरी
— जिस राज्य में गुण-अवगुण का भेद नहीं, वहाँ प्रजा का राजा की मूर्खता के चंगुल में फँस जाने का डर बना रहता है।

देश, काल और परिस्थिति के अनुसार इन्होंने प्राचीन भारतीय नाट्य-पद्धति में से आवश्यक और उपयुक्त-तत्व ग्रहण करके हिन्दी के नवीन नाट्य-धर्म की स्थापना।
→ भारतेन्दु एक समन्वयात्मक बुद्धि रखते थे।

→ कथावस्तु मौलिक — वस्तुचयन में मौलिकता
वस्तुसंगठन में — सरलता।
→ रोचकता है, मन को रमानेवाली शक्ति एवं शैथिल्य का अभाव है।
→ एक सामान्य वातावरण, जिसमें नाटक का परिचय छिपा रहता है। प्रारंभिक अंश में ही नाटक का आभास मिलता

Teacher's Signature

Scanned with CamScanner

भारतेन्दु के नाटकों में सबसे ऊंचा स्वर देशभक्ति का है। यह सर्वथा स्वाभाविक है, क्योंकि भारतेन्दु का समय राजनीतिक दृष्टि से पराधीनता का, सामाजिक दृष्टि से अधोगति का, आर्थिक दृष्टि से शोषण का और धार्मिक-सांस्कृतिक दृष्टि से पाखंड एवं विखंडतावाद का था। इनमें से कोई एक ही परिस्थिति किसी चेतनासंपन्न व्यक्ति को देशभक्ति की ओर उन्मुख करने को पर्याप्त थी। फिर, भारतेन्दु तो सत्साहित्यकार थे — सहृदय, संवेदनशील और देशभक्त।

सामाजिक जागरण में नाटक की भूमिका होती है। दृश्यकाव्य होने के कारण जनमानस पर इसका तत्काल प्रभाव पड़ता है।

आलस्य एवं शिथिलता के बदले नवोत्साहपूर्ण वातावरण की निर्मिति हुई। रूढ़िग्रस्त एवं पाश्चात्य प्रेषित लोगों की प्रवृत्ति को सच्चे धर्म और कर्म की ओर मोड़ा गया।

देश को पराधीनता से मुक्ति के लिए चारित्रबल एवं विचाराभिव्यक्ति के सबल माध्यम की आवश्यकता पड़ती है।

चरित्र-निर्माण के लिए ~~सत्य~~ सत्य के प्रति अटूट आस्था की आवश्यकता होती है।

स्वतंत्र विचारों की अभिव्यक्ति, देशभक्ति की भावना का विकास एवं भाषा को दुरुस्त करने के लिए लोगों का ध्यान आकृष्ट किया।

Scanned with CamScanner